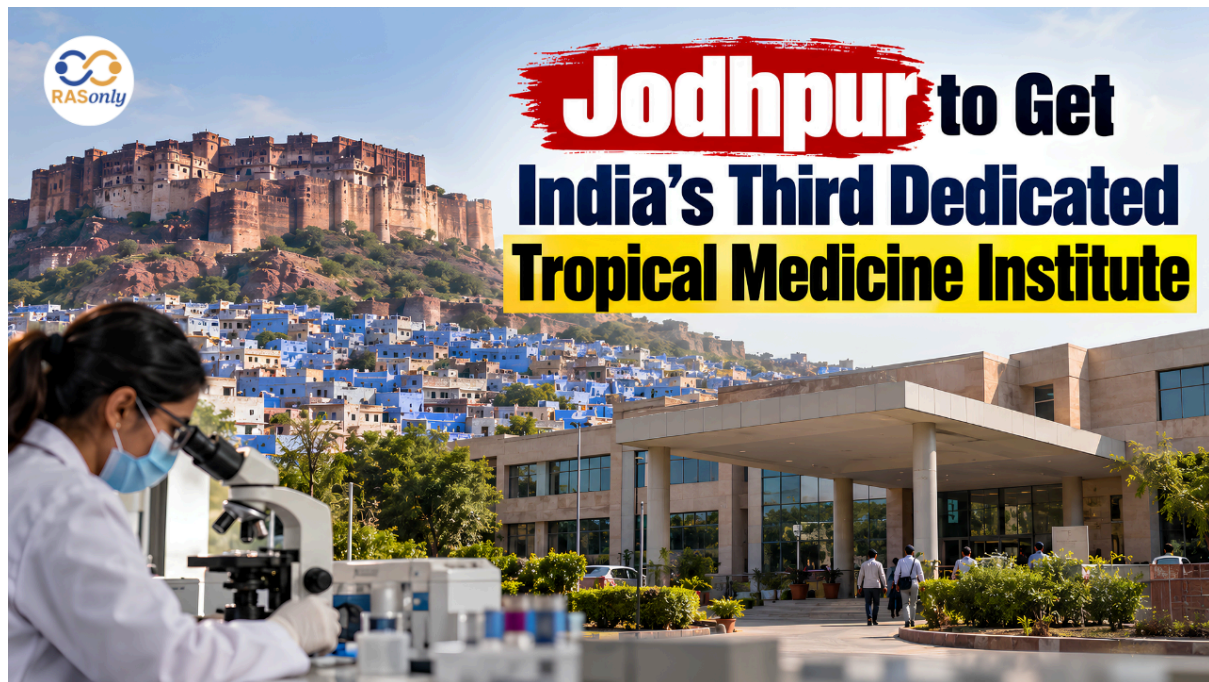


Jodhpur to Get India's Third Dedicated Tropical Medicine Institute



Jodhpur is emerging as an important centre for medical research in western India. The city already hosts the ICMR-National Institute of Health Research (NIHR), which has a long history of research in desert health, vector-borne diseases, and other public-health concerns. The proposed dedicated focus on tropical medicine would enhance the research, diagnosis, and expertise in diseases occurring in tropical and subtropical regions.

Key Highlights

Point	Details
Location	Dr. S.N. Medical College, Jodhpur, Rajasthan
Institute Focus	Tropical Medicine
Major Areas	Infectious diseases, vector-borne diseases & public health
Significance	Strengthening medical research and expertise
Regional Benefit	Greater focus on health challenges of western India

Why Is It Important?

A specialized institute for tropical medicine can contribute to specialized research, surveillance, diagnosis, and training. This can be particularly relevant for diseases influenced by climate, vectors, and environmental conditions. The already established medical research infrastructure in Jodhpur offers a valuable base for developing further research activities.

Connection with Jodhpur's Medical Research

Jodhpur's ICMR institute was established in 1984 as the Desert Medicine Research Centre (DMRC) and was redesignated as ICMR-NIHR in April 2026. Its research facilities include microbiology, biochemistry, and vector biology.

Conclusion

In Jodhpur, the establishment of a dedicated tropical medicine facility would enhance the healthcare and research ecosystem in Rajasthan, providing valuable services to the region. It may add to specialized medical studies, training of professionals, and improve the knowledge of infectious and environment-associated diseases, including those relevant to the region.

MCQs

1. Jodhpur is located in which Indian state?

- A) Gujarat
- B) Rajasthan
- C) Haryana
- D) Punjab

Answer: B) Rajasthan

2. DMRC was established in Jodhpur in:

- A) 1975
- B) 1984
- C) 1991
- D) 2001

Answer: B) 1984

3. DMRC was later redesignated as:

- A) NIHR
- B) NITI
- C) NIRF
- D) NCDC

Answer: A) NIHR

4. Tropical medicine primarily focuses on:

- A) Space science
- B) Tropical diseases and public health
- C) Astronomy
- D) Geology

Answer: B) Tropical diseases and public health

जोधपुर में देश का तीसरा समर्पित ट्रॉपिकल मेडिसिन संस्थान

जोधपुर पश्चिमी भारत में चिकित्सा अनुसंधान के एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभर रहा है। शहर में पहले से ही ICMR-राष्ट्रीय स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान (NIHR) मौजूद है, जो डेजर्ट हेल्थ, वेक्टर-जनित रोगों और अन्य सार्वजनिक स्वास्थ्य संबंधी विषयों पर लंबे समय से शोध कर रहा है। ट्रॉपिकल मेडिसिन पर समर्पित संस्थान की स्थापना से उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में होने वाली बीमारियों से संबंधित अनुसंधान, निदान और विशेषज्ञता को और मजबूत किया जा सकेगा।

प्रमुख बिंदु

बिंदु	विवरण
स्थान	जोधपुर, राजस्थान
संस्थान का फोकस	ट्रॉपिकल मेडिसिन
प्रमुख क्षेत्र	संक्रामक रोग, वेक्टर-जनित रोग एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य
महत्व	चिकित्सा अनुसंधान और विशेषज्ञता को मजबूत करना
क्षेत्रीय लाभ	पश्चिमी भारत की स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों पर अधिक ध्यान

यह क्यों महत्वपूर्ण है?

ट्रॉपिकल मेडिसिन के लिए एक विशेषीकृत संस्थान अनुसंधान, रोग निगरानी, निदान और चिकित्सा प्रशिक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। यह विशेष रूप से उन बीमारियों के अध्ययन में उपयोगी हो सकता है, जो जलवायु, वाहक (Vectors) और पर्यावरणीय परिस्थितियों से प्रभावित होती हैं। जोधपुर में पहले से मौजूद चिकित्सा अनुसंधान का बुनियादी ढांचा आगे की शोध गतिविधियों के विकास के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है।

जोधपुर के चिकित्सा अनुसंधान से संबंध

जोधपुर का ICMR संस्थान वर्ष 1984 में Desert Medicine Research Centre (DMRC) के रूप में स्थापित किया गया था और अप्रैल 2026 में इसे ICMR-National Institute of Health Research (NIHR) के रूप में पुनः नामित किया गया। संस्थान में माइक्रोबायोलॉजी, बायोकेमिस्ट्री और वेक्टर बायोलॉजी जैसी शोध सुविधाएं शामिल हैं।

क्षेत्र के लिए संभावित योगदान

यह संस्थान राजस्थान और पश्चिमी भारत में संक्रामक एवं पर्यावरण से जुड़ी बीमारियों को समझने और उन पर शोध करने में योगदान दे सकता है। इसके साथ ही विशेषज्ञों के प्रशिक्षण, रोगों की निगरानी और सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़े अनुसंधान को भी बढ़ावा मिल सकता है।

निष्कर्ष

जोधपुर में समर्पित ट्रॉपिकल मेडिसिन संस्थान की स्थापना राजस्थान के स्वास्थ्य और चिकित्सा अनुसंधान तंत्र को और मजबूत कर सकती है। यह विशेषीकृत चिकित्सा अध्ययन, पेशेवर प्रशिक्षण और संक्रामक तथा पर्यावरण-संबंधी बीमारियों की बेहतर समझ विकसित करने में योगदान दे सकता है। पश्चिमी भारत की विशिष्ट भौगोलिक और पर्यावरणीय परिस्थितियों को देखते हुए, यह क्षेत्रीय स्वास्थ्य अनुसंधान के लिए भी महत्वपूर्ण आधार बन सकता है।

MCQs

1. जोधपुर किस राज्य में स्थित है?

- A) गुजरात
- B) राजस्थान
- C) हरियाणा
- D) पंजाब

उत्तर: B) राजस्थान

2. DMRC की स्थापना जोधपुर में किस वर्ष हुई थी?

- A) 1975
- B) 1984
- C) 1991
- D) 2001

उत्तर: B) 1984

3. DMRC को बाद में किस नाम से पुनः नामित किया गया?

- A) NIHR
- B) NITI
- C) NIRF
- D) NCDC

उत्तर: A) NIHR

4. ट्रॉपिकल मेडिसिन मुख्य रूप से किस पर केंद्रित है?

- A) अंतरिक्ष विज्ञान
- B) उष्णकटिबंधीय रोग और सार्वजनिक स्वास्थ्य
- C) खगोल विज्ञान
- D) भूविज्ञान

उत्तर: B) उष्णकटिबंधीय रोग और सार्वजनिक स्वास्थ्य

Chandra Shekhar Sain Receives Lalit Kala Akademi National Award



The famous terracotta artist and visual artist Chandra Shekhar Sain has been awarded the Lalit Kala Akademi National Award at the 65th National Exhibition of Art, 2026, in New Delhi. He has been recognised for his terracotta artwork “My Entire World–I” and is the only artist from Rajasthan among the selected awardees this year.

Key Highlights

Point	Details
Artist	Chandra Shekhar Sain
Award	Lalit Kala Akademi National Award
Exhibition	65th National Exhibition of Art, 2026
Awarded Work	My Entire World-I
Medium	Terracotta
Rajasthan Representation	Only selected artist from Rajasthan

Artistic Style and Inspiration

Sain's main medium of work is terracotta, and she is inspired by folk and archaeological traditions of Rajasthan, especially Kalibangan and Molela. His works frequently explore nature, organic forms, birds, animals, seeds, and trees.

Why Is This Important?

The recognition will increase the focus on the contemporary Indian visual art scene, which is greatly enriched by the contributions of Rajasthan, and will help to raise the visibility of the terracotta art of the region on the national agenda. Prior to that, in 2014, Sain was awarded the Rajasthan Lalit Kala Akademi State Art Award and has had over 10 solo exhibitions in India.

Conclusion

Chandra Shekhar Sain's selection for the Lalit Kala Akademi National Award marks an important achievement in his artistic journey. His award-winning terracotta pieces link the rich artistic tradition of Rajasthan with modern expression. The recognition also highlights the continuing relevance of terracotta as a creative medium and places Rajasthan's artistic traditions on a wider national platform.

MCQs

1. Who received the Lalit Kala Akademi National Award?

- A. Himmat Shah
- B. Chandra Shekhar Sain
- C. Gopal Chandra Naskar
- D. Jyoti Swarup

Answer: B. Chandra Shekhar Sain

2. Which artwork was recognised?

- A. My Entire World-I
- B. Rajasthan Dreams
- C. Nature and Life
- D. Desert Forms

Answer: A. My Entire World-I

3. Which medium is associated with Sain's award-winning work?

- A. Oil painting
- B. Photography
- C. Terracotta
- D. Printmaking

Answer: C. Terracotta

4. Which national exhibition featured the award?

- A. 60th National Art Exhibition
- B. 63rd National Art Exhibition
- C. 64th National Art Exhibition
- D. 65th National Exhibition of Art

Answer: D. 65th National Exhibition of Art

चंद्रशेखर सैन को ललित कला अकादमी राष्ट्रीय पुरस्कार

प्रसिद्ध टेराकोटा एवं दृश्य कलाकार चंद्रशेखर सैन को 65वीं राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी, 2026 के लिए ललित कला अकादमी राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। उन्हें उनके टेराकोटा कला作品 "My Entire World-I" के लिए यह सम्मान मिला है। इस वर्ष चयनित पुरस्कार विजेताओं में वे राजस्थान के एकमात्र कलाकार हैं।

मुख्य बिंदु

बिंदु	विवरण
कलाकार	चंद्रशेखर सैन
पुरस्कार	ललित कला अकादमी राष्ट्रीय पुरस्कार
प्रदर्शनी	65वीं राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी, 2026
पुरस्कृत कृति	My Entire World-I
माध्यम	टेराकोटा
राजस्थान का प्रतिनिधित्व	राजस्थान के एकमात्र चयनित कलाकार

कला शैली और प्रेरणा

सैन का प्रमुख कला माध्यम टेराकोटा है। वे राजस्थान की लोक एवं पुरातात्विक कला परंपराओं, विशेष रूप से कालीबंगा और मोलेला से प्रेरणा लेते हैं। उनकी कृतियों में प्रकृति, जैविक आकृतियों, पक्षियों, जानवरों, बीजों और पेड़ों जैसे विषयों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया जाता है।

यह क्यों महत्वपूर्ण है?

यह सम्मान भारतीय समकालीन दृश्य कला में राजस्थान के योगदान को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाता है। साथ ही, यह राजस्थान की समृद्ध टेराकोटा कला परंपरा को व्यापक मंच प्रदान करता है। इससे पहले 2014 में सैन को राजस्थान ललित कला अकादमी राज्य कला पुरस्कार भी मिल चुका है। वे भारत में 10 से अधिक एकल प्रदर्शनियों का आयोजन कर चुके हैं।

निष्कर्ष

चंद्रशेखर सैन का ललित कला अकादमी राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए चयन उनकी कला यात्रा की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उनकी पुरस्कृत टेराकोटा कृति राजस्थान की समृद्ध कलात्मक परंपराओं को आधुनिक अभिव्यक्ति के साथ जोड़ती है। यह सम्मान टेराकोटा को समकालीन कला के एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में रेखांकित करता है और राजस्थान की कला एवं सांस्कृतिक विरासत को राष्ट्रीय स्तर पर और अधिक पहचान दिलाता है।

MCQs

1. ललित कला अकादमी राष्ट्रीय पुरस्कार किसे मिला?

- A. हिम्मत शाह
- B. चंद्रशेखर सैन
- C. गोपाल चंद्र नस्कर
- D. ज्योति स्वरूप

उत्तर: B. चंद्रशेखर सैन

2. किस कृति को पुरस्कार के लिए मान्यता मिली?

- A. My Entire World-I
- B. Rajasthan Dreams
- C. Nature and Life
- D. Desert Forms

उत्तर: A. My Entire World-I

3. सैन की पुरस्कृत कृति का माध्यम क्या है?

- A. ऑयल पेंटिंग
- B. फोटोग्राफी
- C. टेराकोटा
- D. प्रिंटमेकिंग

उत्तर: C. टेराकोटा

4. यह पुरस्कार किस राष्ट्रीय प्रदर्शनी से संबंधित है?

- A. 60वीं राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी
- B. 63वीं राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी
- C. 64वीं राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी
- D. 65वीं राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी

उत्तर: D. 65वीं राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी

RASonly

RASonly

RASonly